❑रास

वीसलदेव रास

नरपति नाल्ह

कवि परिचै

कवि नरपति नाल्ह आदिकाळ अर मध्यकाळ रै संधिकाळ रा मौजीज कवि मानीजै। नाल्ह आंरौ मूळ नांव अर 'नरपति' पदवी रै रूप में विद्वानां मानी है। कवि भाट जाति सूं जाणीजै। आंरी लिख्योड़ी रचना 'वीसलदेव रास' 14वीं सदी री रचना मानीजै अर कवि री भासा भी अजमेर रै आसै-पासै री लखावै, पण प्रामाणिकता रै सागै कवि रौ जलम अर दूजी रचनावां रौ परिचै नीं मिळै। इण रचना रै अलावा कवि रै व्यक्तित्व अर कृतित्व री खोज शोध रौ विसय है। कवि रासपरक काव्य-सैली रौ पुख्ता जाणीकार है। कवि री आ रचना लौकिक, प्रेमाख्यान, सिणगारपरक, गीत अर नाच-सैली री अमोलक रचना है। राजस्थानी साहित्य में नरपति नाल्ह नांव रै जैन कवि रौ उल्लेख 16वीं सदी में मिळै अर कवि भाण री रचना 'हमीर दे चउपई' वि. सं. 1538 में भी नाल्ह रौ नांव मिळै पण अै दोनूं नरपति नाल्ह सूं मेळ नीं खावै। कवि री आ अेक रचना ही उणनैं राजस्थानी आदिकालीन रासपरक काव्य-सैली रौ मौजीज कवि बणावै।

पाठ परिचै

'वीसलदेव रास' आदिकालीन राजस्थानी साहित्य में रास-संज्ञक, विरहपरक, गेय काव्य री घणी महताऊ रचना है। सिणगार रस रै वियोग पख नैं प्रगट करता थकां बारहमासा काव्य-सैली री रीति रौ निरवाह इण काव्य नैं दूजा काव्यां सूं ऊंचै दरजै रौ थरपै। राजमती री विरह-वेदना बारह मास री न्यारी-न्यारी दसावां में ओपतै, ऊंडै भावां सागै सांगोपांग ढंग सूं प्रगट होयी है। अैतिहासिक चरित्र माथै आधारित औ गेय काव्य री पांत में आवै। रास रा मूल तत्त्वां रौ इण मांय सांतरौ मेळ होयौ है। इण री भासा राजस्थानी रै सागै-सागै उत्तर अपभ्रंस काळ री भासा सूं मेळ खावै। इण री भासा जूनी राजस्थानी मानीजै। इण काव्य में अेक ही तरै रौ खास छंद प्रयोग में आयौ है। उण जुग रै सामाजिक-सांस्कृतिक परिचै रै सागै-सागै उण बगत रै लोकाचार, रीति-रिवाज, नेगचार, उत्सव आद रौ भी बखाण इण काव्य में मिळै।

कथासार

धार नगरी रै राजा भोज पंवार री बेटी राजमती रौ ब्यांव अजमेर रा राजा वीसलदेव सूं होवै। ब्यांव में राजा भोज घणै चाव सूं वीसलदेव नैं उण बगत रा नामी ठिकाणा, रजवाड़ा, राज रा नगर, हाथी-पालकी, दासियां आद उपहार में देवै। ब्यांव पछै अजमेर आयां वीसलदेव नैं आपरै सवा लाख घोड़ां, सात सौ हाथियां, गढ अर मिंदर रै वैभव नैं देखनै मन में घमंड आयग्यौ। उणरै इण घमंड नैं राजमती लख लेवै। लारलै जलमां रा पाप अर विधाता री लेखनी रौ लेखौ इण जलम में भोगणौ पड़ै। राजमती रै मूंडै सूं निकळ्या ताता अर अकरा बोल राजमती रै संजोग नैं विजोग में बदळ देवै। राजमती वीसलदेव नैं कैवै कै आप इण बात रौ घणौ घमंड मत करौ, आप जिसा घणा ही वैभवसाली राजा धरती माथै बिराजै है अर उड़ीसा रै राजा रै तौ खाणां में हीरा निपजै है।'' अै ताता बोल वीसलदेव

रै मन-मगज में कील ज्यूं गड जावै। राजा वीसलदेव बारह बरस तांई उड़ीसा जावण रौ प्रण कर्‌यौ। राजा नैं मनावण रा घणा ही उपाय कर्‌या, पण वीसलदेव राजमती अर राजपाठ नैं छोडनै उड़ीसा सिधारग्या। इण बिछोह में राजमती रै घणौ विजोग होयग्यौ। बारह बरसां तांई वा विरह रै ताप में नित तपती, कळपती अर झुरती रैयी। विरह रै ताप सूं पंजर होयगी अर आखर बारह बरसां पछै वीसलदेव धन-माल सागै पधार्‌यौ। राजमती रै पाछौ संजोग-सुख होयौ।

वीसलदेव रास

(1)

चालियउ उलगाणउ कातिग मास।
छोडीया मंदिर घर कविलास।।
छोडीया चउबारा चउखंडी, तठइ पंथ सिरि नयणा गमाइया रोइ।
भूख गई त्रिस ऊचटी, कहि न सखीय नींद किसी परि होइ।।

(2)

मगसिरियइ दिन छोटा जी होइ।
सखीय संदेसउ न पाठवइ कोइ।।
संदेसइ ही बज पड़यउ, ऊंचा हो परबत नीचा घाट।
परदेस पर भुइं गयउ, तठइ चीरीय न आवइ न चालए बाट।।

(3)

देखि सखी हिव लागउ छइ पोस।
धण मरतीय को मत दीयउ दोस।।
दुखि दाधी पंजर हुई, धान न भावए तज्या सिरि न्हाण।
छाहड़ी धूप न आलिंगइ, देखतां मंदिर हुयउ मसांण।।

(4)

माह मास इसीय पडइ ठंठार।
दाधा छइ बनखंड कीधा हो छार।।
आप दहंती जग दहाउ, तूं तउ उवइगउ रे आविज्यो करह पलाणि।
जोवन छत्र उमाहियउ, म्हाकी कनक काया माहे फरेबी आण।।

(5)

फागुण फरहरत्या कंपिया रूंख।
चितइ चमकियउ निसि नींद न भूख।।
दिन राया रितु पालटी, महांकउ मूरख राउ न देषइ आइ।
जीवउं तउ जोवन सखी, फरहरइ चिंहु दिसि बाजइ छइ बाइ।।

(6)

चेत्र मासइ चतुरंगी हे नारि।
प्रीय बिण जीविजइ किसइ अधारि।।
आज दीसइ सु काल्हे नहीं, म्हे किउं होळी हे खेलण जांह।
उलगांणइ की गोरड़ी, म्हांकी आंगुळी काढतां निगलीजइ बांह।।

(7)

बइसाखइ धूर लूणीजइ धान।
सीला पाणी अर पाका जी पान।
कनक काया घट सीचिजइ, म्हांकउ मूरख राउ न जाणए सार।
हाथ लगामी ताजणउ, ऊभउ सेवइ राज दुआर।।

(8)

देखि जेठाणी हिव लागउ छइ जेठ।
मुह कुमलाणा नइ सूक गया होठ।।
मास दिहाडउ दारूण तवइ, धण कउ हे धरणि न लागए पाउ।
अनल जळइ धण परजळइ, हंस सरोवर छंडि गयउ ठांउ।।

(9)

आसाढइ धुरि बाहुड़या मेह।
खलहल्या खाळ नइ बह गई खेह।।
जइ रि आषाढ न आवइ, माता रे मइगल जेउं पग देइ।
सद मतवाळा जेउं ढुळइ, तिहि धरि ऊलग काइ करेइ।।

(10)

सावण बरसइ छइ छोटीय धारि।
प्रीय विण जीविजइ किसइ अधारि।।

सह कोइ खेलइ काजळी, तठइ चिडीय कमेडीय मंडिया आस।
बाबहियउ प्रीय प्रीय करइ, मोनइ अणख लगावइ हो सावण मास।।

(11)
भाद्रवइ बरिसइ छइ गुहिर गंभीर।
जळ थळ महियल सहु भरया नीर।।
जागे कि सायर ऊलटयउ, निसी अंधारीय बीज खिवाइ।
बादळ धरती स्यउं मिल्या, मूरख राउ न देखइ जी आइ।
हूं तो गोसामी नइ एकली, दुइ दुख नाल्ह किउं सहणा जाइ।।

(12)
आसोजइ धण मंडिया आस।
मंडिया मंदिर घर कविलास।।
धउळिया चउबारा चउखंडी, साधण धउळिया पउलि प्रकार।
गउख चढी हरखी फिरइ, जउ घर आविस्यइ मंध भरतार।।

काव्य रौ सार

कवि बारहमासा रीति सूं बारह महीनां री रितुवां रौ महीनै वार चित्रण करता थकां राजमती री मनोदसा अर विरह री वेदना रौ इण भांत वरणन कर्यौ है—

1. पीव परदेस बैठ्या है। काती रौ महीनौ लागग्यौ। देव री पूजा पतिदेव बिना कियां होवै! देव मिंदर छूटग्या। पौढण सारू ऊंचा म्हैल–माळिया छूटग्या। चौक, माळिया सगळा धणी बिना सूना। नित प्रियतम आवण री राजमती बाट जोवै। उण रा नैण नित आंसूड़ां रै कारण मगसा पड़ रैया है। विरह री पीड़ा सूं भूख अर तिस उचटगी। हे सखि! नींद कांई होवै, म्हनैं तौ इणरौ बोध तक नीं है।

2. मिगसर रै मास में दिन घणा छोटा होवै। प्रियतम रौ संदेसौ भी नीं आवै। संदेसै माथै जाणै बाधा रौ पड़दौ पड़ग्यौ। पीव रै मारग ऊंचा–ऊंचा भाखर है अर नीची–नीची घाट्यां। म्हारौ भरतार परदेसी धरा पर है। जठै सूं कोई चिट्ठी–पत्री कै संदेसौ नीं आवै अर ना ही सखरौ मारग। रस्तौ घणौ अबखौ है।

3. हे सखि, देख! अबै पोस रौ महीनौ लाग्यौ है। राजमती रा विरह री पीड़ा सूं प्राण निसरै। इणरौ दोस म्हनैं (राजमती) नीं लागै। इण विरह री दांझ में बळनै राजमती पंजर होवै है। नित रौ न्हावण छूटग्यौ। धान भी नीं भावै। तावड़ौ अर छियां रौ आलिंगन भी रुचिकर नीं लागै। उणरौ मन रूपी मिंदर पीव रूपी देव बिना कोरौ मसाण ज्यूं लखावै।

4. माघ रै महीनै में हाड कंपावण वाळौ सी पड़ै। इण हाडकंपाऊ सियाळै सूं सगळा रूंख अर वन बळग्या अर राख ज्यूं होयग्या। ठंठार खुद ठरै अर आखौ जगत धुजावै। राजमती री विरह पीड़ा ठंठार ज्यूं परकत रौ कण–कण ठारै, इण भांत लखावै। राजमती वीसलेदव नैं बिना रुक्यां बेगा आवण री अरदास करै। इण देह अर रूप रूपी ऊंठ रै पलाण कसण सारू बेगौ आवण री विनती करै। जोबन रौ छत्र घणौ ऊंचौ कैयनै वा आपरी स्वर्ण–काया री वीसलदेव नैं आंण देवै अर मिळण सारू बेगा पधारण रौ विनय करै।

5. फागण आपरै उफाण माथै है। रूंख कंपकंपावै। मनड़ौ घणौ अधीर है। दिन-रात भूख नीं लागै। फागण में दिन घणा सुहावणा होय जावै। रितु भी आपरौ मिजाज पलटै। पण राजमती रौ मूरख राव परदेसां सूं घरां नीं पधारै। उणरै जोबन रौ आधार उणरौ प्रियतम है। फागण में बायरौ चारूं दिस में घणौ जोर सूं बाजै।

6. चैत्र मास में नारी रौ हिवड़ौ अर पहनावौ अलेखूं रंगां वाळौ होवै। पण पीव रै बिना इण वेळा राजमती रै पति बिना जीवण अर रंग रौ कांई आधार? आज री वाल्ही वेळा काल नीं रैसी। औ बातां अर रंग काल कोनी रैवै। राजमती किण सागै होळी खेलण जावै? उणरौ सायबौ परदेसां अर वा विरह री पीड़ा में दाझीजै। उणरै आंगळी री अंगूठी उणरै बांह तांई निसरण लागी। उणरौ डील इत्तौ पतळौ होयग्यौ है।

7. बैसाख महीनौ सरू होवतां ही पाक्योड़ौ धान काढणौ सरू होय जावै। पाणी सीतळ लागै अर रूंख रा पाना पाका पड़ जावै। म्हारौ मूरख पीव मनड़ै रौ मरम अर रुत रौ सार नीं समझै। जोबन नैं रोकणौ किणी रै वस में नीं है।

8. हे जेठाणी, देख अबै जेठ रौ महीनौ लागग्यौ है। जेठ री तपती सूं मूंडौ कुम्हळावण लाग्यौ है अर होठ सूकण लाग्या है। जेठ रै महीनै में दिन भयंकर तपै। धणी सूं मिलण किण विध होवै? बळती पून में धरती अर धण दोनूं परजळीजै। हंस सरोवर छोडनै ठाडै ठांव चला गया।

9. आसाढ महीनै रै आवतां ई घणौ जोरदार मेह आयौ है। खाळा अर नाळा पाणी सूं खळकण लाग्या। खेह बैवण लागी। इण वेळा बादळ मदमस्त हाथी ज्यूं आभै में बरसता फिरै। हमेसा मतवाळा ज्यूं मिजाज लियां जळ बरसावै। पण उणरौ पति इण रुत में परदेस बसै तौ वा कांई कर सकै है अर्थात उण खातर आ वेळा आणंद री नीं विरह री पीड़ा बणै।

10. सावण महीनै में बादळां सूं नेन्ही-नेन्ही बूंदां बरसै, पीव रै बिना अेक विरहणी रै जीवण रौ कांई आधार होय सकै। सगळी सखियां काजळी तीज रै तिंवार में रमै। चीड़ी-कमेड़ी रै भी आस बंधै अर वै आपरौ आलणौ बणायनै नेह सूं रसै-बसै। बाबहिया (पपैया) पीहु-पीहु रौ कलरव अर विलाप करै। पीहु-पीहु रौ विलाप अर औ सावण रौ महीनौ म्हनैं ईसकै रौ दुख देवै अर म्हैं पीव रै बिछोह में दुख भोगूं।

11. भादवै रै महीनै में बादळ गरजणा रै सागै भारी बरसै। च्यारूंमेर जळ ही जळ। जळ-थळ अेक होय जावै। जाणै धरती माथै सागर आयनै उलट्यौ होवै। अंधारी रातां में मेघ अर बीजळी गरजणा सागै चमकै। बादळ अर धरती अेक होय जावै। पण म्हारौ मूरख राव परदेसां सूं घरां नीं पधारै। हे ईश्वर, म्हैं इण वेळा अेकली हूं। दो-दो दुख भेळा भुगतूं— अेक तौ विजोग अर दूजी बिरखा री आ सुहावणी रुत, दोनूं कीकर सहीजै?

12. आसोज रौ महीनौ लागतां ही आसा बंधै। घर, मिंदर अर कविलास सगळां में नूंवौपण अर आसा रौ संचार होवै। चौबारा, पोळ आद ऊजळा धवळ होय जावै। ऊंचै गवाक्ष माथै चढनै राजमती हरख सूं फिरै, कदास घर आवै म्हारा परदेसी पीव!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

चालियउ=चाल्यौ। उलगांणउ=प्रवासी। कातिग मास=काती रौ महीनौ। कविलास=ऊंची अट्टालिका, कैलास। चउबारा=चौबारौ, चौक। चउखंडी=चौखंडौ माळियौ। नयण=नैण। त्रिस=तिरसा, प्यास। ऊचटी=गयी, उच्चंट। सखीय=सखि। मगसिरिइ=माघ महीनौ। संदेसउ=संदेसौ। न पाठवइ=नीं भेजै। बज=वस्त्र, कपड़ौ। परदेसे=विदेस में। भुंई=भूमि। चीरीय=पत्र, चिट्ठी। बाट=मारग। चालए=चालै। पोस=पौह रौ मास। लागउ=लागग्यौ। छह=है। धण=पत्नी। दीयउ=देवणौ। दाधि=बाळणौ। पंजर=अस्थिपंजर, कंकाल होवणौ। तज्या=छोड दिया, त्यागणौ।

छाहड़ी=छियां। आलिंगइ=गळै मिळणौ। इसीय=इसौ। ठंठार=हाडकंपाऊ सियाळौ। वनखंड=जंगळ। उवइगउ=तेजी सूं। पलाणि=ऊंठ माथै पिलाण कसणौ। उमाहियउ=उमंग सूं, फैला लियौ। फेरबी=फिरा दी। आण=दुहाई। फरहरया=फहराईजै। चितइ=हिवड़ौ, हीयौ। चमकियउ=अधीर, आकळ-बाकळ। राया=सुहावणा। राउ=राजा, पीव। चिहू=चारू। दिसी=दिसावां। बाइ=बायरौ, हवा। जांह=जाऊं। अलगाणइ=परदेसी पीव। गोरड़ी=धण, स्त्री। बइसाखइ=बैसाख रौ महीनौ। धुर=सरू में। लूणीजइ=काटणौ, निकाळणौ। सीला=सीतळ। अरु=अर। राउ=राजा। ताजणउ=ताजणौ, चाबुक। आसाढइ=आसाढ मास। बाहुड़्या=आया। मेह=बिरखा। खेह=खंख, रजकण, गरद। जेउ=ज्यूं। खलहल्या=खळ-खळ बैवणौ। माता मइगल=मस्त हाथी। ढुळइ=मदरौ-मदरौ चालणौ। सत्रावण=सावण मास। छह=है। धार=बिरखा री धारा। जीवियइ=जीवण रौ। बाबहियउ=पपैयौ। अनख=ईसकै री पीड़। भाद्रवइ=भादवौ। गुहिर=गैरौ। सायर=सागर। उलटयउ=उलटियौ। निसि=रात। बीज=बीजळी। स्यउं=दोनूं। दुइ दुख=दोनूं दुख। आसोजइ=आसोज रौ मास। धवळिया=सफेद, धोळा। पहिल=पोळ, प्रतोळी। गउख=गवाक्ष, गोखौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजमती किणरी बेटी ही—

(अ) राजा भोज री　　(ब) अचलदास री

(स) आनंदपाल री　　(द) वीसलदेव री

( )

2. वीसलदेव नैं तानौ कुण मार्‌यौ—

(अ) राजा भोज　　(ब) उणरौ मंत्री

(स) राजमती　　(द) उणरी माता

( )

3. वीसलदेव प्रवास माथै किण ठौड़ गयौ—

(अ) बंगाल　　(ब) गुजरात

(स) मालवा　　(द) उड़ीसा

( )

4. राजमती रै विरह वरणन किण सैली में होयौ है—

(अ) वचनिका सैली　　(ब) संवाद सैली

(स) बारहमासा सैली　　(द) दवावैत सैली

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजमती रै पिव अर पिता रौ नांव बतावौ।
2. वीसलदेव कित्ता बरसां तांई प्रवास माथै रैया ?

3. ठंठार किण महीनै में ठारै ?
4. किण मास में दिन सुवावणा लागै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. माघ रै महीनै ठंठार किण भांत री पड़ै ?
2. राजमती रै विजोग रौ कारण बतावौ।
3. बिरखा रुत विरहणी माथै कांई असर न्हाखै ? लिखौ।
4. ''आसोज रै महीनौ नूंवौपण अर उल्लास लावै।'' इण कथन नैं समझावौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''वीसलदेस रास में राजमती रौ विजोग सांगोपांग ढंग सूं बारहमासा सैली में प्रगट होयौ।'' इण कथन नैं दाखला देयनै सिद्ध करौ।
2. बारमासा री रितुवां रौ प्रभाव लिखौ।
3. वीसलदेव रास री काव्यगत विसेसतावां लिखौ।
4. वीसलदेव रास रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ—

1. मगसिरियइ दिन छोटा जी होइ।
   सखीय संदेसउ न पाठवइ कोइ।।
   संदेसइ ही बज पड़यउ, ऊंचा हो परबत नीचा घाट।
   परदेस पर भुइं गयउ, तठइ चीरीय न आवइ न चालए बाट।।

2. चेत्र मासइ चतुरंगी हे नारि।
   प्रीय बिण जीविजइ किसइ अधारि।।
   आज दीसइ सु काल्हे नहीं, म्हे किउं होळी हे खेलण जांह।
   उलगांणइ की गोरड़ी, म्हांकी आंगुळी काढतां निगलीजइ बांह।।

3. सावण बरसइ छइ छोटीय धारि।
   प्रीय विण जीविजइ किसइ अधारि।।
   सह कोइ खेलइ काजळी, तठइ चिडीय कमेडीय मंडिया आस।
   बाबहियउ प्रीय प्रीय करइ, मोनइ अणख लगावइ हो सावण मास।।